हम पंछी उन्मुक्त गगन के

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे

- व्याख्या- इस अंश में पक्षियों की स्वभावगत विशेषता एवं स्वतंत्र प्रियता का वर्णन किया गया है | पक्षी अपने बारे में मनुष्य को बताते हैं कि हम खुले आसमान में उड़ने वाले हैं | हम पिंजरे में बंद होकर अपना स्वाभाविक गीत नहीं सुना सकेंगे | यदि हमें सोने के पिंजरे में भी रखा जाएगा तो उससे टकराकर हमारे कोमल पंख टूट जाएँगे |

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से

व्याख्या- पक्षी कहते हैं कि वे प्राकृतिक जल स्त्रोतों का जल पीते हैं, किन्तु पिंजरे में बंद होकर तो हम भूखे –प्यासे मर जाएँगे | हमारे लिए पिंजरे में रखी सोने की कटोरी और उसमे रखे मैदे से अच्छी कड़वी निबौरी (नीम का फल) है | अर्थात हमे स्वतंत्रता प्रिय है |

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहें हैं
तरु की फुनगी पर के झूले ।

व्याख्या- इस अंश में पक्षी पिंजरे में कैद होने पर अपने कष्टमय जीवन की गाथा सुना रहे हैं | पक्षी कहते हैं कि सोने से बने पिंजरे में कैद होकर वे अपनी स्वाभाविक उड़ान, उड़ने की गति सब भूल चुके हैं | कभी वे पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर बैठकर झूला झूलते थे, पर पिंजरे में कैद होने से यह सपना बनकर रह गया है |

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने ।

व्याख्या- पक्षी कहते हैं कि कभी उनकी इच्छा होती थी कि हम उड़ते-उड़ते नीले आसमान का छोर देख लेते | हम पक्षी लाल किरण के समान अपनी चोंच खोलकर तारे रुपी अनार के दाने चुग लेते |

होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी |

व्याख्या- इस अंश में पक्षियों की उड़ने के लिए बेचैनी और मनुष्य से उनका निवेदन-भाव प्रकट हुआ है | पक्षी अपनी स्वतंत्र प्रियता और उड़ने की इच्छा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हम पक्षी उड़ान भरते हुए इस असीम क्षितिज से मुकाबला करते | अर्थात हम क्षितिज का पता कर लेते | ऐसा करते हुए या तो हम क्षितिज को पा लेते या उड़ान भरते-भरते हमारी मृत्यु हो जाती |

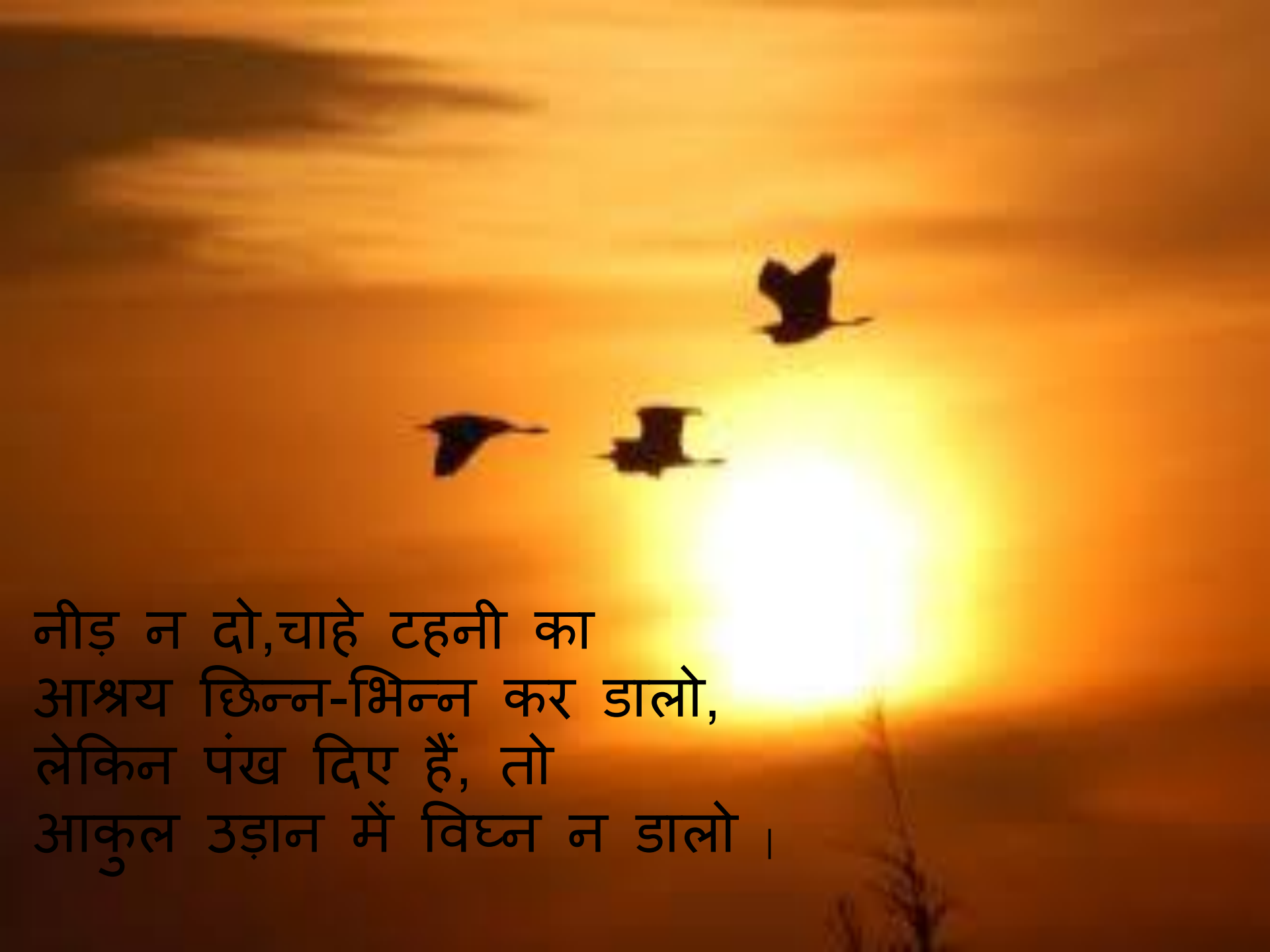
नीड़ न दो,चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो ।

व्याख्या- पक्षी मनुष्य से प्रार्थना करते हैं कि हे मनुष्य ! हमें पेड़ों की टहनी पर भले ही घौंसला न बनाने दो और हमारे बने घोंसले को नष्ट कर दो, पर जब ईश्वर ने हमे पंख दिए हैं तो हमारी व्याकुल और उत्सुकता भरी उड़ान में बाधा न डालो | अर्थात पिंजरे में बंद करके हमारी स्वतंत्रता न छीनों और उन्मुक्त रूप से उड़ने दो |

काव्य सौंदर्य

भाव सौंदर्य

कविता में स्वतंत्रता के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है | पराधीनता में मिलने वाली सुख-सुविधा कष्टदायक होती है |

शिल्प सौंदर्य

- शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है |
- तुकांत शब्दों के प्रयोग से कविता में लयात्मकता आ गई है
- 'पुलकित पंख' में अनुप्रास अलंकार है|
- तत्सम शब्दावली जैसे कनक,स्वर्ण,श्रृंखला, नीड़, आश्रय आदि का प्रयोग किया गया है |
- 'भूखे-प्यासे' में द्वंद्व समास है |

कविता का मूल भाव

'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' कविता में शिवमंगल सिंह जी ने पक्षियों की अभिलाषा के माध्यम से मनुष्य के जीवन में स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाया है और ये बताया गया है कि पराधीनता में मिलने वाली सुख-सुविधा कष्टदायक होती है | ईश्वर ने सृष्टि में प्रत्येक जीव को स्वतंत्र बनाया है इसलिए मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है कि वो अपने मनोरंजन के लिए पशु-पक्षियों को कैद करे | पक्षी स्वतंत्र होकर आकाश की ऊँचाइयाँ नापते हुए उड़ान भरना चाहते हैं तथा मनुष्य से प्रार्थना करते हैं कि उनकी उड़ान में बाधा न डाले | यह कविता स्वतंत्रता के महत्त्व को वर्णित करती है |